CHAPTER 17, ग़ज़ल

PAGE 167, प्रश्न - अभ्यास - ग़ज़ल के साथ

11:1:17:प्रश्न - अभ्यास - ग़ज़ल के साथ:1

1. आखिरी शेर में गुलमोहर की चर्चा हुई है। क्या उसका आशय एक खास तरह के फूलदार वृक्ष से है या उसमें कोई सांकेतिक अर्थ निहित है? समझाकर लिखें।

उत्तर : गुलमोहर फूलों का पेड़ है। लेकिन यहां इस कविता में गुलमोहर स्वाभिमान के प्रतीकात्मक अर्थ को दर्शाता है। कवि हमें गुलमोहर के माध्यम से संदेश देता है कि चाहे घर पर हो या बाहर गुलमोहर हमें दोनों जगहों पर स्वाभिमान के साथ जीने के लिए प्रेरित करता है।

11:1:17:प्रश्न - अभ्यास - ग़ज़लकेसाथ:2

2. पहले शेर में चिराग शब्द एक बार बहुवचन में आया है और दूसरी बार एकवचन में। अर्थ एवं काव्य-सौंदर्य की दृष्टि से इसका क्या महत्व है?

उत्तर : पहले शेर में, चिराग शब्द के बहुवचन शब्द "चिरागाँ" का उपयोग किया गया है। इसका मतलब है अत्यधिक सुख सुविधाएं तथा दूसरी बार यह शब्द एकवचन के रूप में उपयोग किया गया है जिसका मतलब है सीमित सुख सुविधाएँ। दोनों शब्द अपनी अपनी जगह महत्वपूर्ण है। इस शब्द का बहुवचन कल्पना को दर्शाता है तथा एकवचन शब्द जीवन की वास्तविकता को दर्शाता है। इस तरह, एक ही शब्द जो दोनों बार आता है, उनके संबंधित संदर्भों में अलग-अलग प्रभाव होते हैं।

11:1:17:प्रश्न - अभ्यास - गज़ल के साथ:3

3. गज़ल के तीसरे शेर को गौर से पढ़ें। यहाँ दुष्यंत का इशारा किस तरह के लोगों की ओर है?

उत्तर : ग़ज़ल के तीसरे शेर में कवि ऐसे लोगो का वर्णन करते है जो उत्साहहीन और दिन-हीन है। इस प्रकार के व्यक्ति हर प्रकार की विषम परिस्थिति में खुद को सहज कर लेते है तथा

स्वीकार कर लेते है। वे अन्याय का विरोध शक्ति खो चुके है। अफसर और नेता ऐसे ही जनता का शोषण कर रहे है तथा उनकी उदासीनता का फायदा उठा रहे है।

11:1:17:प्रश्न - अभ्यास - गज़लकेसाथ:4

4. आशय स्पष्ट करें :

तेरा निज़ाम है सिल दे ज़ुबान शायर की,
ये एहतियात जरूरी है इस बहर के लिए।

उत्तर : इन पंक्तियों के माध्यम से शासक वर्ग पर व्यंग्य किया जाता है। सत्ता में होने पर शासक वर्ग किसी भी शायर की जुबां पर पाबन्दी लगा सकता है। शासक को अपनी शक्ति बनाए रखने के लिए ऐसी सावधानी बरतनी चाहिए। लेकिन यह पूरी तरह से अनुचित है। यदि परिवर्तन करना है तो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता आवश्यक है।

PAGE 167, प्रश्न - अभ्यास - गज़लकेआसपास

11:1:17:प्रश्न - अभ्यास - ग़ज़लकेआसपास:1

5. दुष्यंत की इस गज़ल का मिज़ाज बदलाव के पक्ष में है। इस कथन पर विचार करें।

उत्तर : कवि दुष्यंत की यह ग़ज़ल सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में बदलाव का आह्वान करती है। वह जनता, समाज, शासक, प्रशासन और मानवीय मूल्यों के बिगड़ने से चिंतित है और इसमें बदलाव चाहते है। चारों ओर भ्रष्टाचार है और आम आदमी निराश है। लोग यह सब सहने के आदी हो गए हैं। कवि अपने आवाज से लोगों को जागरूक कर रहा है। सत्ता उसे भी कुचल देना चाहती है इसलिए कवि क्रांति की कामना करता है।

11:1:17:प्रश्न - अभ्यास - ग़ज़लकेआसपास:2

6. हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन
दिल के खुश रखने को गालिब ये खयाल अच्छा है
दुष्यंत की गज़ल का चौथा शेर पढ़ें और बताएँ कि गालिब के उपर्युक्त शेर से वह किस तरह जुड़ता है?

उत्तर :दुष्यंत की ग़ज़ल पर चौथा शेर है:-

ख़ुदा नहीं, न सही, आदमी का ख्वाब सही,
कोई हसीन नज़ारा तो है नज़र के लिए।

यह शेर पूरी तरह से ग़ालिब के शेर से प्रभावित है। दोनों का मतलब एक ही है। ग़ालिब "जन्नत" को और दुष्यंत भगवान को मानवीय कल्पना मानते हैं। दोनों ही इनके अस्तित्व को मन को संतुष्ट करने वाले कारण के रूप में मानते हैं।

11:1:17:प्रश्न - अभ्यास - गज़लकेआसपास:3

7. 'यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है' यह वाक्य मुहावरे की तरह अलग-अलग परिस्थितियों में अर्थ दे सकता है मसलन, यह ऐसी अदालतों पर लागू होता है,जहाँ इंसाफ नहीं मिल पाता। कुछ ऐसी परिस्थितियों की कल्पना करते हुए निम्नांकित अधूरे वाक्यों को पूरा करें।

क) यह ऐसे नाते-रिश्तों पर लागू होता है, ...

ख) यह ऐसे विद्यालयों पर लागू होता है, ...

ग) यह ऐसे अस्पतालों पर लागू होता है, ...

घ) यह ऐसी पुलिस व्यवस्था पर लागू होता है, ...

उत्तर :

क. यह ऐसे नाते-रिश्तों पर लागू होता है, जिनमें प्यार नहीं होता।

ख. यह ऐसे विद्यालयों पर लागू होता है, जहाँ विद्या के नाम पर अविद्या सिखाई जाती है।

ग. यह ऐसे अस्पतालों पर लागू होता है, जहाँ इलाज की जगह रोग बढ़ता है।

घ. यह ऐसी पुलिस-व्यवस्था पर लागू होता है, जहां सुरक्षा के बजाय भय मिलता है।